ISSN : 0974-522X JIF : 2.397
Year : 9, Vol. : 2 No. : 35
April - June, 2017

# श्रीप्रभु pratibha

## RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES

Intellectual effort towards Social Values

*A peer reviewed journal*

**Editor : PRABUDDHA MISHRA**

Published by : Pratibha Prakashan, Triveni Sewa Samiti, Allahabad
E-mail : shriprbhu@gmail.com
**Website : www.shriprbhu.com**

ISSN-0974-522X
R.N.I.-UPHIN /2008/30056
ISRA Journal Impact Factor-2.397

श्रीप्रभु

# pratibhā

**Research Journal of Humanities**
**Intellectual effort on social values**

*A peer reviewed (Refereed) journal*

**Year-9, Volume-2, Part-35**
**April - June, 2017**

**Editor– Prabuddha Mishra**
**Co-editor– Pratyush Pandey**
**Pratibha Tiwari**

ISSN-0974-522X
R.N.I.-UPHIN /2008/30056
ISRA Journal Impact Factor-2.397

# श्रीप्रभु pratibha

## Refereed Research Journal of Humanities

Year-9, Volume-2, Part-35
April - June, 2017

## Contents


- श्रीभास्करस्य सौभाग्यभास्करः
  पवनकुमारदीक्षितः 05-06
- संस्कृत काव्यशास्त्र में गुण सम्बन्धी अवधारणा
  ठण्डी लाल मीणा 07-10
- अभिज्ञानशाकुन्तल में मानवाधिकार की अवधारणा
  शैल कुमारी तिवारी 11-18
- तुलसी की जीवन दृष्टि
  सत्य प्रकाश पाण्डेय 19-21
- **चंपारण महात्मा का : उदय**
  अर्चना पाठ्या 22-26
- प्रेमचन्द एंव निराला युगीन साहित्य और स्त्री परिप्रेक्ष्य
  विष्णु प्रसाद शुक्ल 27-32
- मोक्ष की अवधारणा एवं नानकवाणी
  प्रिया शर्मा 33-36
- हरिवंश राय बच्चन के काव्य का चरित्र
  चन्दन सिंह 37-39
- छायावादी काव्य में भावात्मक दृष्टि या दृष्टिकोंण की प्रमुखता
  आशीष कुमार मिश्र 40-44
- प्रगतिवादी काव्य में प्रकृति के विविध आयाम
  रूमी पाण्डेय 45-48

pratibha Part-35, April-June-2017, pg-33-36
R.N.I-UPHIN/2008/30056, ISSN-0974-522X, JIF-2.397

# मोक्ष की अवधारणा एवं नानकवाणी

प्रिया शर्मा

हिंदी राष्ट्रभाषा कोश के अनुसार **'मोक्ष'** शब्द का अर्थ बंधन से दूर जाना, छुटकारा, जन्म-मरण के बंधन से छूट जाना, मुक्ति, मृत्यु एवं मौत है।[1] आधुनिक हिंदी शब्दकोश में 'मोक्ष' का अर्थ बंधन से मुक्त होना, आवागमन से होने वाली मुक्ति, कैवल्य, निर्माण, उत्सर्जन, अपवर्ग दिया गया है।[2] श्वेताश्वेतरोपनिषद् में परमात्मा (रुद्र-शिव) को जानने पर विशेष बल दिया गया है और यह कहा गया है कि उसके जानने से ही संसार से मुक्ति मिल सकती है।[3] गीता में पूर्ण आत्मज्ञान को मोक्ष कहा गया है- **'जिसने इंद्रिय, मन और बुद्धि का संयम कर लिया है, तथा जिसके भय, इच्छा और क्रोध छूट गए हैं, वह मोक्ष परायण मुनि सदा-सर्वदा मुक्त ही है।'**[4] न्यायदर्शन में मोक्ष दुःख के पूर्ण निरोध की अवस्था है, वे इसे 'अपवर्ग' कहते हैं। 'अपवर्ग' से तात्पर्य शरीर और इंद्रियों के बंधनों से आत्मा का मुक्त होना है। जब तक आत्मा शरीर स्थित रहता है, तब तक इसके लिए दुःखों का पूर्ण विनाश संभव नहीं है।[5]

शरीर, मन सहित छः इंद्रियाँ तथा उन इंद्रियों के छः रूप, रस आदि विषय एवं उनके रूप ज्ञान आदि छः ज्ञान तथा सुख एवं दुःख, इन इक्कीसों से दुख उत्पन्न होता है।[6] उमेश मिश्र ने 'पुरुष' और 'प्रकृति' के कल्पित तथा आरोपित संबंध को 'बंधन' कहा है। इसी 'बंधन' को दूर करना, 'पुरुष' का अपने-आप को पहचानना, प्रकृति को अपने स्वरूप का ज्ञान हो जाना ही 'विवेक बुद्धि' है। यही 'मुक्ति' है।[7] सांख्यकारिका के अनुसार मोक्ष का अर्थ है पुरुष को निजस्वरूप का ज्ञान होना अथवा आत्मा देश-काल से परे, शरीर और मन से भिन्न और स्वभावतः नित्य, अमर, अविनाशी है- इसका पूर्ण ज्ञान हो जाना मोक्ष है। जीव को जब यह अनुभूति हो जाती है, तब उसका शरीर या मन विकारों से प्रभावित होना बंद हो जाता है और वह केवल उनका साक्षी रूप होकर रहता है।[8] योग दर्शन के अनुसार चित्त में विकार होते रहते हैं और इस विकारी चित्त पर आत्मा का प्रकाश पड़ता रहता है तथा विवेक-ज्ञान के अभाव में आत्मा उन्हीं में अपने को देखने लगता है। फलस्वरूप वह सांसारिक विषयों में सुख-दुख का अनुभव करने और उनमें राग-द्वेष के भाव रखने लगता है। यही आत्मा का बंधन है।[9] इस बंधन से छुटकारा पाकर आत्मा-साक्षात्कार प्राप्त करना योग का प्रमुख उद्देश्य है।

मीमांसकों के अनुसार जगत् के साथ आत्मा के संबंध के विनाश का नाम मोक्ष है -**प्रपंचसम्बन्धविलयो मोक्षः**। मोक्ष की दशा में आत्मा को आनंद का अनुभव नहीं होता। मीमांसा के मत में चैतन्य आत्मा का स्वाभाविक गुण नहीं है, बल्कि शरीर आदि के संपर्क में आने से उसे सुख-दुःख का अनुभव होता है। मोक्ष दशा में आत्मा शरीर आदि से अलग हो जाती है।[10] वेदांत दर्शन के अनुकूल जीवात्मा और ब्रह्म में तात्त्विक भेद नहीं है। भ्रम के